नैतिक विकास की अवस्थाएँ (Stage of moral development) : कोह् लबर्ग ने नैतिक विकास की कुल छः अवस्थाओ का वर्णन किया है लेकिन इन्होंने दो – दो अवस्थाओ को एक साथ रखकर उनके तीन स्तर बना दिए है । ये तीन स्तर निम्न प्रकार से है ।

(1) प्री – कन्वेंशनल (Pre – Conventional)

(2) कन्वेंशनल (Conventional)

(3) पोस्ट कन्वेंशनल (Post Conventional)

(1) प्री . कन्वेंशनल (Pre – Conventional) : जब बालक किसी बाहरी तत्व या किसी भैतिक घटना के संदर्भ मे किसी आचरण को नैतिक अभवा अनैतिक मानता है तो उसकी नैतिक तर्क शकित प्री – कन्वैशन स्तर की कही जाती है । इस स्तर के अन्तर्गत दो अवस्थाएँ आती है ।

(i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था (Stage of order and punishment)

(ii) अंहकार की अवस्था (Stage of Ego)

(i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था (Stage of Order and Punishment) : कोहलबर्ग के अनुसार इस अवस्था में बच्चे का चिन्तन दण्ड से प्रभावित होता है । परिवार के सभी सदस्य बच्चे को कुछ कार्य कसने के आदेश देते रहते है । इन आदेशो का पालन न करने पर बच्चे को र्दण्डत किया जाता है । इसलिए बच्चा यह सोचता है कि दण्ड से बचने के लिए आदेश का पालन करना अनिवार्य है । कम आयु में और अपरिपक्व होने के कारण बच्चा किसी कार्य को करने का या न करने का निर्णय इसलिए करता है । क्योंकि वह दंड से डरता है । अर्थात आज्ञाओं का पालन इसालिए करता है । क्योंकि वह दंड से डरता है । अर्थात आज्ञाओं का पालन इसलिए करता है कि वह दंडित न हो । इस प्रकार नैतिक विकास की शुरू की अवस्था में दण्ड को ही बच्चो की नैतिकता का मुख्य आधार माना जाता है ।

(ii) अंहकार की अवस्था (Stage of Ego) : इस अवस्था में आकर बच्चे के चिन्तन का स्वरूप बदल जाता है । जैसे – जैसे बच्चे की आयु बढ़ती है वह परिपक्व होता है । तो वह अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओ को समझने लगता हैं

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

और उसके द्वारा उसकी इछाए पूरी हो जाति है । यादि उसका कोई उद्देश्य झूठ बोलने से पूरा होता है । तो वह झूठ बोलता है । अगर भूख लगी है । और चुरा कर वह कुछ खा लेता है । तो वह इन क्रिभाओ को नैतिक आयरण ही समझता है नैतिक विकास की इस अवस्था का आधार बालक का अंहकार (Ego) होता है ।

(2) कन्वेशनल स्तर (Conventional Level) : इस स्तर को भी दो उप उवस्थाओं में विभाजित किया जाता है ।

(i) प्रशंसा की अवस्था (Stage of Appreciation)

(ii) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था (Stage of Respect for social system)

(i) प्रशंसा की अवस्था (Stage of Appreciation) : इस अवस्था में बच्चा जो भी करता है वह दूसरे लोगों के द्वारा उसकी प्रशंसा करने के लिए करता है । जब उसे पाता होता है कि दूसरे लोग उसकी प्रशंसा पाने के लिए ऐसा करते है । दूसरी ओर समाज के सदस्य बच्चो से विशेष अपेक्षाए करने लगते है , तो समाज से उन्हे स्वीकृति मिलने लगती है । इस अवस्था में बच्चे उन्हीं व्यवहारो को उचित व नैतिक मानते है जिनके लिए वे परिवार , स्कूल , पड़ोस मित्र – मण्डली से प्रशंसा प्राप्त करते है । इस प्रकार हम कह सकते है कि इस अवस्था में बच्चे के चिन्तन का स्वरूप समाज और उसके परिवेश से निर्धारित होता है ।

(ii) सामाजिक व्यवस्था के सम्मान की अवस्था (Stage respect for social system) : नैतिक विकास की यह उप – अवस्था अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जती है । कोह् लबर्ग के अनुसार समाज के ज्यादातर सदस्य नैतिक विकास की इस अवस्था तक पहुंच जाते है । इस अवस्था में प्रवेश से पहले बालक समाज को केवल इसलिए महत्वपूर्ण मानता है कि वह उसकी प्रशंसा करता है । अब वह समाज को स्वंय एक लक्ष्य मानने लगता है । इस अवस्था में पहुँचकर स्वंय यह समझने लगता है । कि सामाजिक नियमो के विरूद्ध प्रत्येक कार्य को अनैतिक कहता है । इस प्रकार हम देखते है कि कोह् लबर्ग ने नैतिक विकास की अवस्थाओं का क्रमिक अध्ययन किया है ।

(3) पोस्ट कंन्नेशनल स्तर (Post – Conventional Level) : कोह् लबर्ग ने अपने तीसरे स्तर को भी दो उप – अवस्थाओ में बाँटा है ।

(i) सामाजिक समझौते की अवस्था (Stage of social contract)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(ii) विवेक की अवस्था (Stage of Conscience)

(i) सामाजिक समझौते की अवस्था (Stage of social contract) : इस अवस्था तक आते आते व्यकित को नैतिक चिन्तन की दशा में पर्याप्त परिवर्तन आ जाते है । अब व्यक्ति परस्पर लेन देन में विश्वास करने लगता है। कि व्यक्ति व समाज के बीच एक समझौता होता है । व्यक्ति यह मानने लगता है , कि व्यक्ति को सामाजिक नियमों का पालन इसलिए करना चाहिए क्योंकि समाज हमारे हितो की रक्षा करता है । वो हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज के नियमो का पालन करे । अगर व्यकित सामाजिक नियमो का पालन नहीं करता तो व्यक्ति व समाज के बीच का समझौता टूट जाता हैं अतः अपने नियमो , परम्पराओं , कानूनो के द्वारा समाज व्यक्ति को स्वतंत्रता अधिकार और सुरक्षा देता है । अतः ऐसे नियमों का उल्लघंन अनैतिक मना जाता है ।

(ii) विवेक की अवस्था (Stage of Conscience) : कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास की छठी व अन्तिम अवस्था यही होती है । क्योकि इस अवस्था में पहुँचने पर व्यक्ति नैतिकता के बारे में अपना दृष्टिकोण भी विकसित कर लेता है । व्यक्ति में विवेक पैदा हो जाता है । व्यक्ति के अब अच्छे बुरे उचित – अनुचित आदि विषयों पर स्वंय के व्यकितगत विचार विकसित हो जाते है । अब व्यक्ति के नैतिक विकास का एकमात्र आधार विवेक ही बन जाता है । अब इस अवस्था में व्यक्ति नियमो का पालन स्वंय के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर करने लगता है । इस अवस्था में व्यक्ति अब नियमो की वैद्यता को भी चुनौती देने लगता है । क्योंकि वे नियम उसके विवेक से मेल नहीं खाते है । अब व्यक्ति केवल विवेक के आधार पर ही जीवित रहने का आदि हो जाता है । अब व्यक्ति के लिए वही आचरण नैतिक होगा जो उसके स्वंय के विवेक का समर्थन प्राप्त कर लेगा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner